DATE

Mo Tu We Th Fr Sa Su

आदरणीय बाबूजी जुगलकिशोर जी युगल, कोटा द्वारा ब्र० निर्मल कुमार जी जैन, दमोह को लिखा गया पत्र।

दि. 1.1.1976

आज एक पत्र से जानकर विस्मय सा हुआ कि आपने दि 16 (1975) से मौन एवम आमरण अनशन स्वीकार कर लिया है। और यह किस अनुरोध से हुआ, उसे जानने के सभी प्रयास भी निष्फल हो रहे हैं। आज पत्र मिलते ही मैंने आपको दमोह एक आवश्यक तार दिया है। जिसमें आपसे अविलंब निसंकोच अनशन समाप्त कर देने की प्रार्थना की है। एवम् लिखा है कि मैं आपको एक सुंदर पत्र लिख रहा हूँ।

मैं आपके निर्मल ज्ञान से उस क्षण से प्रभावित हूँ। जब एक दिन कोटा शिक्षण ~~शिक्षि~~ प्रशिक्षण समारोह के अवसर पर कुछ ब्रह्मचारीगण के सानिध्य में हम लोगों ने कुछ आध्यात्मिक चर्चा की थी और आज भी आपके उस ज्ञान पर मुझे गर्व है। मेरा अनुमान है कि आपने मुक्ति की ओर जो चरण बढ़ाया है उसके संबंध में पहले विचार किया होगा।

आप तो प्रज्ञा संपन्न हैं। और पूज्य गुरुदेव बहुत चरण सानिध्य में आपने बाहुल्यता से यह सुना है कि चैतन्य तत्व

DATE | Mo Tu We Th Fr Sa Su

तो सदैव अनशन स्वभावी है। मुझे ऐसा लगता है कि संभवतः इस त्रैकालिक सत्य ने आपके चित्त में एक तर्क उत्पन्न कर दिया है। कि सदैव अनशन स्वभावी आत्मा को यह अनित्य अशन का ग्रहण कैसा? वस्तुतः तो आत्मा के अनशन स्वरूप की श्रद्धा हो जाने पर इस तर्क के लिए कोई अवकाश ही नहीं रहता कि अनशन को अशन क्यों? वास्तव में आत्मा जब त्रिकाल अनशन स्वरूप ही है तो उसके संबंध में अशन के ग्रहण का तर्क स्वयमेव भ्रामक एवम् मिथ्या हो जाती है। और फिर अशन के त्याग की वार्ता तो काफी दूर चली जाती है। अनशन स्वभावी आत्मा की बात सुनकर उस की दृष्टि, प्रतीति एवम् अनुभूति का उस पुरुषार्थ जाग्रत हो जाना चाहिए, ना कि भोजन को छोड़ने का आग्रह।

एक बात और है कि - आत्मा के अनशन स्वभावी होने पर भी संभवतः आप इस तथ्य से अपरिचित नहीं है कि उसमें सदा से अशन वृत्तियों का उत्पाद होता रहता है। और पूज्य गुरुदेव श्री भी हजारों बार अपने प्रवचनों में उस पहलू का संकेत करते हैं।

आपको यह अच्छी तरह विदित है कि उस अशन वृत्तियों का क्रमिक ह्रास स्वरूप लीन चारित्र वृत्ति के क्रमिक विकास में (उत्कर्ष) होता है। यह बात मुझे आपकी

DATE

स्मृति में नहीं लाना है कि हम लोगों की भूमिका चतुर्थ गुणस्थान से अधिक नहीं है। और अशन वृत्ति का अभाव चारित्रवंत अप्रमत्त दिगम्बर संतों के होता है। वहां भी अशन के अभाव से चारित्र नहीं होता है। वरन् अंतः चारित्र के प्रादुर्भाव में स्वमेव अनशन होता है। दिगम्बर संतों की सल्लेखना में क्रमिक अनशन ~~वृत्ति कभी नहीं होती~~ च का यह क्रमिक सहज स्वरूप सौंदर्य अलौकिक वस्तु है। वहां साग्रह अनशन वृत्ति कभी नहीं होती। तो साथ ही प्रतर्तमान अनशन को चारित्र भी नहीं माना जाता है। अतः अध्यात्म के पवित्र प्रांगण में जिनका प्रवेश है और जिनका ज्ञान चारित्र के निश्चय - व्यवहार के पहलुओं का दर्पण है। ऐसे हम लोगों के लिए क्या वांछनीय स्वम् शोभनीय है कि अशन के बल पूर्वक विरह के प्रचुर स्वम् पुनरावृत्त विकल्पों के चक्रव्यूह को जगत के समक्ष समाधिमरण घोषित कर के पूज्य स्वामी जी की प्रतिष्ठा को लांछित करें? क्या चतुर्थ गुणस्थान की भूमिका में आहार का अभाव हो जाने पर आहार वृत्ति का भी अभाव हो जाता है? और क्या आहार वृत्ति की निरंतरता में भी समाधिमरण संभव होता है? यह हमें नहीं भूल जाना चाहिए, कि "मुझे भोजन करना है" इसी का नाम आहार का विकल्प नहीं है। वरन "मुझे भोजन नहीं करना है और अनशन है" यह भी समान कोटि का आहार विकल्प है। यह निश्चय मानिए

DATE Mo Tu We Th Fr Sa Su

कि हमारा यह अनुष्ठान हमें स्वर्ग तो ले जायेगा, किंतु महान उद्यम से संचित तत्त्व इसी धरती पर रह जाएगा, जो फिर अपलब्ध नहीं होगा, और उसके बिना हम कहीं के नहीं रह जायेंगे।

अशन के प्रति उठने वाले विकल्पों से डरकर अनशन के विकल्पों के श्मशान में आत्मघात करना ज्ञानियों के लिए कोई आदर्श कृत्य नहीं है। वरन् यह एक ऐसा उदाहरण है कि जिसके अनुशीलन में मात्र हमारा ही नहीं वरन् असंख्य प्राणियों का अधः पतन है।

आप मेरी इस बात से असहमत नहीं होंगे कि हम छद्मस्थ जीवों से कभी भूल अथवा अजानकारी वश अति मंद कषाय की प्रेरणा से अपनी भूमिका के अयोग्य कार्य हो जाना कोई अनहोनी घटना नहीं है किन्तु गुरुजनों से वह भूल परिज्ञान हो जाने पर हमें उस आग्रह का अविलंब परित्याग कर देना चाहिए। अन्यथा गुरुओं की अवज्ञा का महापाप संचित कर हम साथ ले जाते हैं।

पूज्य गुरुदेव के आश्रय से भी आपको अगणित आदेश मिल रहे हैं। फिर भी आप अपने अनुपादेय निश्चय पर दृढ़ हैं। यह कैसी विचित्रता है? मेरी आपसे पुनः करबद्ध प्रार्थना है कि इस अहितकर आग्रह का परित्याग करके अविलंब पूज्य गुरुदेव के चरणों की पुनः शरण लीजिए। अनशन के परित्याग में आपका अहित नहीं वरन् परम हित है।